Quick word tests

तरक़्क़ी	तरक़्क़ी	आह्लाद	आह्लाद	फ़्रीज	फ़्रीज	मग़्ज़	मग़्ज़	हृत्स्थल	हृत्स्थल	सिर्फ	सिर्फ
ज़्यादा	ज़्यादा	ब्राह्मण	ब्राह्मण	ह्रितिक	ह्रितिक	सम्यग्ज्ञान	सम्यग्ज्ञान	ज्योत्स्ना	ज्योत्स्ना	व्हिस्की	व्हिस्की
मन्ज़ूर	मन्ज़ूर	मिस्त्री	मिस्त्री	एल्ज़े	एल्ज़े	दिग्दर्शन	दिग्दर्शन	ईषत्स्पृष्ट्	ईषत्स्पृष्ट्	इश्क़	इश्क़
इलेक्ट्रान	इलेक्ट्रान	दुष्ग्रह्य	दुष्ग्रह्य	उत्त्य	उत्त्य	पंक्ति	पंक्ति	उत्स्रुत	उत्स्रुत	प्रश्न	प्रश्न
स्ट्रीटकार	स्ट्रीटकार	अद्भुत	अद्भुत	उत्य	उत्य	मंगलवार	मंगलवार	सद्गति	सद्गति	रुश्द	रुश्द
छुट्टी	छुट्टी	इल्ज़ाम	इल्ज़ाम	रत्न	रत्न	दुर्लंघ्य	दुर्लंघ्य	सद्ग्रन्थ	सद्ग्रन्थ	वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य
महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अक्षरे	अक्षरे	सज़्स	सज़्स	पच्चीस	पच्चीस	उद्घाटन	उद्घाटन	ओष्ठ्य	ओष्ठ्य
ज्येष्ठ	ज्येष्ठ	ज्ञान	ज्ञान	एज्ज्ञा	एज्ज्ञा	अच्छा	अच्छा	ज़िद्दी	ज़िद्दी	मिस्त्री	मिस्त्री
दृष्टांत	दृष्टांत	मौके	मौके	ब्यर्थै	ब्यर्थै	उज्र	उज़्र	प्रसिद्ध	प्रसिद्ध	आह्वान	आह्वान
चिट्ठी	चिट्ठी	कैंटोमेंट	कैंटोमेंट	तरक़्क़ी	तरक़्क़ी	संस्कृत	संस्कृत	उद्बोध	उद्बोध	आह्लाद	आह्लाद
वाङ्मय	वाङ्मय	छूट कुछ	छूट कुछ	फ्रैक्चर	फ्रैक्चर	हिंस्र	हिंस्र	द्रव	द्रव	ह्रास	ह्रास
वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य	करेंट	करेंट	डॉक्टर	डॉक्टर	छुट्टी	छुट्टी	दारिद्र्य	दारिद्र्य	अंकुड़ा	अंकुड़ा
पुनस्स्थापना	पुनस्स्थापना	राष्ट्रून	राष्ट्रून	इलेक्ट्रॉन	इलेक्ट्रॉन	चिट्ठी	चिट्ठी	अध्रुव	अध्रुव	अंतर्निहित	अंतर्निहित
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य	कॉफी	कॉफी	रक्त	रक्त	विशाखपट्नम	विशाखपट्नम	मंज़ूर	मंज़ूर	अन्तः	अन्त:
कम्प्यूटर	कम्प्यूटर	हिंदू-मुस्लिम	हिंदू-मुस्लिम	वक्त्र	वक्त्र	ट्रैन	ट्रैन	मंत्री	मंत्री	अंतर्वेशन	अंतर्वेशन
सान्न्य	सान्न्य	करणाऱ्या	करणाऱ्या	युक्त्यभास	युक्त्यभास	सुपाठ्य	सुपाठ्य	स्वातंत्र्य	स्वातंत्र्य	अग्नि	अग्नि
इज़्ज़त	इज़्ज़त	स्नेह	स्नेह	वक़्फ़	वक़्फ़	लड्डू	लड्डू	द्वंद्व	द्वंद्व	अद्भुत	अद्भुत
उज्ज्वल	उज्ज्वल	श्री	श्री	शुक्ल	शुक्ल	ब्रह्मण्य	ब्रह्मण्य	उन्नीस	उन्नीस	छुछुंदर	छुछुंदर
प्राप्त्याशा	प्राप्त्याशा	स्त्री	स्त्री	रिक्शा	रिक्शा	उत्क्रम	उत्क्रम	इंस्टिट्यूट	इंस्टिट्यूट	हुंकार	हुंकार
इकत्तीस	इकत्तीस	ध्ड्यां	ध्ड्यां	पक्ष	पक्ष	उत्क्षेप	उत्क्षेप	उन्हें	उन्हें	हित इच्छुक	हित इच्छुक
सत्रह	सत्रह	शक्ति	शक्ति	लक्ष्मी	लक्ष्मी	विद्युत्ग्रहक	विद्युत्ग्रहक	दीन्ह्यो	दीन्ह्यो	कुर्री	कुर्री
पद्म	पद्म	महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अभक्ष्य	अभक्ष्य	महत्त्व	महत्त्व	नैप्स्यून	नैप्स्यून	कुल्हिया	कुल्हिया
विद्यार्थी	विद्यार्थी	कट्टू	कट्टू	दिक्स्थापन	दिक्स्थापन	पत्थर	पत्थर	प्राप्त	प्राप्त		
उन्नीस	उन्नीस	रूप	रूप	सख़्त	सख़्त	विद्युत्दर्शी	विद्युत्दर्शी	सब्ज़ी	सब्ज़ी		
पश्चिम	पश्चिम	हूँ	हूँ	अख्त्यार	अख्त्यार	पत्नी	पत्नी	छब्बीस	छब्बीस		
श्रीलंका	श्रीलंका	बुत्तो	बुत्तो	ज़ख़्म	ज़ख़्म	सपत्न्य	सपत्न्य	मार्किट	मार्किट		
विश्वविद्यालय	विश्वविद्यालय	बार्गी	बार्गी	ख्रिष्टां	ख्रिष्टां	उत्प्रवास	उत्प्रवास	दुर्ज्ञेय	दुर्ज्ञेय		
स्नान	स्नान	कुंग	कुंग	फ़ख्र	फ़ख्र	त्र्याहिक	त्र्याहिक	उर्दू	उर्दू		
बुद्ध	बुद्ध	हूप	हूप	अग्ग्रास	अग्ग्रास	विद्युतशक्ति	विद्युतशक्ति	निर्द्वन्द्व	निर्द्वन्द्व		

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्गवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।। अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागति जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्गवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ ॥ अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागति जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

119 देशों के बच्चों ने UAE का राष्ट्रगान गाकर बनाया रिकॉर्ड

केवल 6 सेकेंड में 'आउट ऑफ स्टॉक' हुआ जियाओमी रेडमी नोट

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिप-कार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लि-पकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

तीन मिररलेस कैमरे के साथ आया निकॉन

Publish Date:Mon, 01 Dec 2014 10:12 AM (IST) | Updated Date:Mon, 01 Dec 2014 11:35 AM (IST)

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

बेंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

बेंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत सफलता है और शानदार अहसास है। केकेआर

फोटो में देखें, क्या हुआ जब ग्रांड फैशन इंवेट में Bollywood Divas ने रैंप पर उतरकर बिखेरे जलवे

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट।।

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान।।

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नही होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नही होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को

से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं।।

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं।।

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

Consonant spacing

पपकपवपवकवव
पपखपवपवखवव
पपगपवपवगवव
पपघपवपवघवव
पपङपवपवङवव
पपचपवपवचवव
पपछपवपवछवव
पपजपवपवजवव
पपझपवपवझवव
पपञपवपवञवव
पपटपवपवटवव
पपठपवपवठवव
पपडपवपवडवव
पपढपवपवढवव
पपणपवपवणवव
पपतपवपवतवव
पपथपवपवथवव
पपदपवपवदवव
पपधपवपवधवव
पपनपवपवनवव
पपपपवपवपवव
पपफपवपवफवव
पपबपवपवबवव
पपभपवपवभवव
पपमपवपवमवव
पपयपवपवयवव
पपरपवपवरवव
पपलपवपवलवव
पपळपवपवळवव
पपवपवपववвв
पपशपवपवशवव
पपषपवपवषवव
पपसपवपवसवव
पपहपवपवहवव
पपक़पवपवक़वव
पपख़पवपवख़वव
पपग़पवपवग़वव
पपज़पवपवज़वव
पपड़पवपवड़वव
पपढ़पवपवढ़वव
पपफ़पवपवफ़वव
पपय़पवपवय़वव
पपक्षपवपवक्षवव
पपज्ञपवपवज्ञवव

Vowel spacing

पपअपवपवअवव
पपऑपवपवऑवव
पपअ‍ॅपवपवअ‍ॅवव
पपइपवपवइवव
पपईपवपवईवव
पपउपवपवउवव
पपऊपवपवऊवव
पपएपवपवएवव
पपऐपवपवऐवव
पपऍपवपवऍवव
पपऎपवपवऎवव
पपआपवपवआवव
पपओपवपवओवव
पपऔपवपवऔवव
पपऋपवपवऋवव
पपॠपवपवॠवव
पपऌपवपवऌवव
पपॡपवपवॡवव

Rakar spacing

पपक्रपवपवक्रवव
पपख्रपवपवख्रवव
पपग्रपवपवग्रवव
पपघ्रपवपवघ्रवव
पपङ्रपवपवङ्रवव
पपच्रपवपवच्रवव
पपछ्रपवपवछ्रवव
पपज्रपवपवज्रवव
पपझ्रपवपवझ्रवव
पपञ्रपवपवञ्रवव
पपट्रपवपवट्रवव
पपठ्रपवपवठ्रवव
पपड्रपवपवड्रवव
पपढ्रपवपवढ्रवव
पपण्रपवपवण्रवव
पपत्रपवपवत्रवव
पपथ्रपवपवथ्रवव
पपद्रपवपवद्रवव
पपध्रपवपवध्रवव
पपन्रपवपवन्रवव
पपप्रपवपवप्रवव
पपफ्रपवपवफ्रवव
पपब्रपवपवब्रवव
पपभ्रपवपवभ्रवव
पपम्रपवपवम्रवव
पपय्रपवपवय्रवव
पपर्‍्रपवपवर्‍्रवव
पपल्रपवपवल्रवव
पपव्रपवपवव्रवव
पपश्रपवपवश्रवव
पपष्रपवपवष्रवव
पपस्रपवपवस्रवव
पपह्रपवपवह्रवव
पपळ्रपवपवळ्रवव
पपक्ष्रपवपवक्ष्रवव
पपज्ञ्रपवपवज्ञ्रवव

Conjunct spacing

पपक्तपवपवक्तवव
पपऱुपवपवऱुवव
पपऱूपवपवऱूवव
पपङ्यपवपवङ्यवव
पपज्जपवपवज्जवव
पपज्थपवपवज्थवव
पपज्यपवपवज्यवव
पपज्सपवपवज्सवव
पपछ्यपवपवछ्यवव
पपट्यपवपवट्यवव
पपठ्यपवपवठ्यवव
पपड्यपवपवड्यवव
पपढ्यपवपवढ्यवव
पपट्टपवपवट्टवव
पपट्ठपवपवट्ठवव
पपठ्ठपवपवठ्ठवव
पपड्ढपवपवड्ढवव
पपड्डपवपवड्डवव
पपढ्ढपवपवढ्ढवव
पपत्तपवपवत्तवव
पपत्खपवपवत्खवव
पपत्थपवपवत्थवव
पपत्नपवपवत्नवव
पपत्सपवपवत्सवव
पपत्यपवपवत्यवव
पपद्धपवपवद्धवव
पपद्नपवपवद्नवव
पपद्बपवपवद्बवव
पपद्भपवपवद्भवव
पपद्बपवपवद्बवव
पपद्धपवपवद्धवव
पपद्ध्यपवपवद्ध्यवव
पपद्मपवपवद्मवव
पपद्भपवपवद्भवव
पपद्दपवपवद्दवव
पपन्भपवपवन्भवव
पपन्मपवपवन्मवव
पपल्जपवपवल्जवव
पपल्थपवपवल्थवव
पपल्भपवपवल्भवव
पपल्मपवपवल्मवव
पपल्यपवपवल्यवव
पपद्यपवपवद्यवव
पपद्ध्यपवपवद्ध्यवव
पपद्मपवपवद्मवव
पपष्टपवपवष्टवव
पपन्भपवपवन्भवव
पपष्ठपवपवष्ठवव
पपल्जपवपवल्जवव
पपह्णपवपवह्णवव
पपह्नपवपवह्नवव
पपह्मपवपवह्मवव
पपह्यपवपवह्यवव
पपह्लपवपवह्लवव
पपह्वपवपवह्ववव

U/Uu variant spacing

पपहुपवपवहुवव
पपहूपवपवहूवव
पपहृपवपवहृवव
पपहॄपवपवहॄवव
पपहुपवपवहुवव
पपहूपवपवहूवव

पपरुपवपवरुवव
पपरूपवपवरूवव
पपदुपवपवदुवव
पपदूपवपवदूवव
पपदृपवपवदृवव

Vowel sign spacing

पपपंपपरंपपकंपप
पपपॅपपरॅपपकॅपप
पपपँपपरँपपकँपप
पपपँपपरँपपकँपप
पपपॆपपरॆपपकॆपप
पपपॆंपपरॆंपपकॆंपप
पपपॆँपपरॆँपपकॆँपप
पपपेपपरेपपकेपप
पपपेंपपरेंपपकेंपप
पपपेँपपरेँपपकेँपप
पपपैपपरैपपकैपप
पपपैंपपरैंपपकैंपप
पपपैँपपरैँपपकैँपप

पपपापपरापपकापप
पपपिपपरिपपकिपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपींपपरींपपकींपप
पपपीँपपरीँपपकीँपप
पपपॉपपरॉपपकॉपप
पपपॉँपपरॉँपपकॉँपप
पपपॊपपरॊपपकॊपप
पपपॊंपपरॊंपपकॊंपप
पपपॊँपपरॊँपपकॊँपप
पपपोपपरोपपकोपप
पपपोंपपरोंपपकोंपप
पपपोँपपरोँपपकोँपप

पपपौपपरौपपकौपप
पपपौंपपरौंपपकौंपप
पपपौँपपरौँपपकौँपप

पपपुपपरुपपकुपप
पपपूपपरूपपकूपप
पपपृपपरृपपकृपप
पपपॄपपरॄपपकॄपप
पपपॢपपरॢपपकॢपप
पपपॣपपरॣपपकॣपप

पपर्पपपर्रपपर्कपप
पपर्पंपपर्रंपपर्कंपप
पपर्पॅपपर्रॅपपर्कॅपप
पपर्पॅंपपर्रॅंपपर्कॅंपप
पपर्पॆपपर्रॆपपर्कॆपप
पपर्पॆंपपर्रॆंपपर्कॆंपप
पपर्पेपपर्रेपपर्केपप
पपर्पेंपपर्रेंपपर्केंपप
पपर्पैपपर्रैपपर्कैपप
पपर्पैंपपर्रैंपपर्कैंपप

पपपऽपवपववऽवव
पपॽपवपवॽवव
पपप:पवपवव:वव

Numeral spacing

००००१०१०११
००१०१०१११११
००२०१०१२११
००३०१०१३११
००४०१०१४११
००५०१०१५११
००६०१०१६११
००७०१०१७११
००८०१०१८११
००९०१०१९११

Letter-punct spacing

पपक, पवक.
पपख, पवख.
पपग, पवग.
पपघ, पवघ.
पपङ, पवङ.
पपच, पवच.
पपछ, पवछ.
पपज, पवज.
पपझ, पवझ.
पपञ, पवञ.
पपट, पवट.
पपठ, पवठ.
पपड, पवड.
पपढ, पवढ.
पपण, पवण.
पपत, पवत.
पपथ, पवथ.
पपद, पवद.
पपध, पवध.
पपन, पवन.
पपप, पवप.

पपफ, पवफ.
पपब, पवब.
पपभ, पवभ.
पपम, पवम.
पपय, पवय.
पपर, पवर.
पपल, पवल.
पपळ, पवळ.
पपव, पवव.
पपश, पवश.
पपष, पवष.
पपस, पवस.
पपह, पवह.
पपक़, पवक़.
पपख़, पवख़.
पपग़, पवग़.
पपज़, पवज़.
पपड़, पवड़.
पपढ़, पवढ़.
पपफ़, पवफ़.
पपय़, पवय़.
पपक्ष, पवक्ष.
पपज्ञ, पवज्ञ.

पपअ, पवअ.
पपऄ, पवऄ.
पपअॅ, पवअॅ.
पपइ, पवइ.
पपई, पवई.
पपउ, पवउ.
पपऊ, पवऊ.
पपए, पवए.
पपऐ, पवऐ.
पपऍ, पवऍ.
पपऎ, पवऎ.

पपआ, पवआ.
पपओ, पवओ.
पपऔ, पवऔ.
पपऋ, पवऋ.
पपॠ, पवॠ.
पपऌ, पवऌ.
पपॡ, पवॡ.

पपङ्ग, पवङ्ग.
पपछ्र, पवछ्र.
पपट्र, पवट्र.
पपठ्र, पवठ्र.
पपड्र, पवड्र.
पपढ्र, पवढ्र.
पपद्र, पवद्र.
पपर्, पवर्.
पपह्र, पवह्र.
पपळ्र, पवळ्र.

पपत्त, पवत्त.
पपऱु, पवऱु.
पपऱू, पवऱू.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ठ, पवट्ठ.
पपठ्ठ, पवठ्ठ.
पपड्ढ, पवड्ढ.
पपड्ड, पवड्ड.
पपढ्ढ, पवढ्ढ.
पपद्ध, पवद्ध.
पपद्न, पवद्न.
पपद्ब, पवद्ब.
पपद्भ, पवद्भ.
पपद्व, पवद्व.
पपद्ध्र, पवद्ध्र.

पपद्द, पवद्द.
पपष्ट, पवष्ट.
पपन्भ, पवन्भ.
पपष्ठ, पवष्ठ.
पपल्ज, पवल्ज.
पपह्ण, पवह्ण.
पपह्न, पवह्न.
पपह्ल, पवह्ल.
पपह्व, पवह्व.

पपहु, पवहु.
पपहू, पवहू.
पपहृ, पवहृ.
पपहॄ, पवहॄ.
पपहॢ, पवहॢ.
पपहॣ, पवहॣ.
पपरु, पवरु.
पपरू, पवरू.
पपदु, पवदु.
पपदू, पवदू.
पपदृ, पवदृ.

-
पपक; पवक:
पपख; पवख:
पपग; पवग:
पपघ; पवघ:
पपङ; पवङ:
पपच; पवच:
पपछ; पवछ:
पपज; पवज:
पपझ; पवझ:
पपञ; पवञ:
पपट; पवट:
पपठ; पवठ:

पपड; पवड:
पपढ; पवढ:
पपण; पवण:
पपत; पवत:
पपथ; पवथ:
पपद; पवद:
पपध; पवध:
पपन; पवन:
पपप; पवप:
पपफ; पवफ:
पपब; पवब:
पपभ; पवभ:
पपम; पवम:
पपय; पवय:
पपर; पवर:
पपल; पवल:
पपळ; पवळ:
पपव; पवव:
पपश; पवश:
पपष; पवष:
पपस; पवस:
पपह; पवह:
पपक़; पवक़:
पपख़; पवख़:
पपग़; पवग़:
पपज़; पवज़:
पपड़; पवड़:
पपढ़; पवढ़:
पपफ़; पवफ़:
पपय़; पवय़:
पपक्ष; पवक्ष:
पपज्ञ; पवज्ञ:

पपअ; पवअ:
पपऄ; पवऄ:
पपॲ; पवॲ:
पपइ; पवइ:
पपई; पवई:
पपउ; पवउ:
पपऊ; पवऊ:
पपए; पवए:
पपऐ; पवऐ:
पपऍ; पवऍ:
पपऎ; पवऎ:
पपआ; पवआ:
पपओ; पवओ:
पपऔ; पवऔ:
पपऋ; पवऋ:
पपॠ; पवॠ:
पपऌ; पवऌ:
पपॡ; पवॡ:

पपङ्र; पवङ्र:
पपछ्र; पवछ्र:
पपट्र; पवट्र:
पपठ्र; पवठ्र:
पपड्र; पवड्र:
पपढ्र; पवढ्र:
पपद्र; पवद्र:
पपर्; पवर्:
पपह्र; पवह्र:
पपळ्र; पवळ्र:

पपत्त; पवत्त:
पपऱु; पवऱु:
पपऱू; पवऱू:
पपट्ट; पवट्ट:
पपट्ठ; पवट्ठ:
पपठ्ठ; पवठ्ठ:
पपड्ढ; पवड्ढ:
पपड्ड; पवड्ड:
पपढ्ढ; पवढ्ढ:
पपद्घ; पवद्घ:
पपद्न; पवद्न:
पपद्ब; पवद्ब:
पपद्भ; पवद्भ:
पपद्म; पवद्म:
पपद्ध; पवद्ध:
पपद्द; पवद्द:
पपष्ट; पवष्ट:
पपन्भ; पवन्भ:
पपष्ठ; पवष्ठ:
पपल्ज; पवल्ज:
पपह्ण; पवह्ण:
पपह्न; पवह्न:
पपह्ल; पवह्ल:
पपह्व; पवह्व:

पपहु; पवहु:
पपहू; पवहू:
पपहृ; पवहृ:
पपहॄ; पवहॄ:
पपह्लु; पवह्लु:
पपह्लू; पवह्लू:
पपरु; पवरु:
पपरू; पवरू:
पपदु; पवदु:
पपदू; पवदू:
पपदृ; पवदृ:

-
पपक| पवक:
पपख| पवख:
पपग| पवग:
पपघ| पवघ:
पपङ| पवङ:
पपच| पवच:
पपछ| पवछ:
पपज| पवज:
पपझ| पवझ:
पपञ| पवञ:
पपट| पवट:
पपठ| पवठ:
पपड| पवड:
पपढ| पवढ:
पपण| पवण:
पपत| पवत:
पपथ| पवथ:
पपद| पवद:
पपध| पवध:
पपन| पवन:
पपप| पवप:
पपफ| पवफ:
पपब| पवब:
पपभ| पवभ:
पपम| पवम:
पपय| पवय:
पपर| पवर:
पपल| पवल:
पपळ| पवळ:
पपव| पवव:
पपश| पवश:
पपष| पवष:
पपस| पवस:
पपह| पवह:
पपक़| पवक़:
पपख़| पवख़:
पपग़| पवग़:
पपज़| पवज़:
पपड़| पवड़:
पपढ़| पवढ़:
पपफ़| पवफ़:
पपय़| पवय़:
पपक्ष| पवक्ष:
पपज्ञ| पवज्ञ:

पपअ| पवअ:
पपऄ| पवऄ:
पपॲ| पवॲ:
पपइ| पवइ:
पपई| पवई:
पपउ| पवउ:
पपऊ| पवऊ:
पपए| पवए:
पपऐ| पवऐ:
पपऍ| पवऍ:
पपऎ| पवऎ:
पपआ| पवआ:
पपओ| पवओ:
पपऔ| पवऔ:
पपऋ| पवऋ:
पपॠ| पवॠ:
पपऌ| पवऌ:
पपॡ| पवॡ:

पपङ्र| पवङ्र:
पपछ्र| पवछ्र:
पपट्र| पवट्र:
पपठ्र| पवठ्र:
पपड्र| पवड्र:
पपढ्र| पवढ्र:
पपद्र| पवद्र:
पपर्| पवर्:
पपह्र| पवह्र:
पपळ्र| पवळ्र:

पपत्त| पवत्त:
पपऱु| पवऱु:
पपऱू| पवऱू:
पपट्ट| पवट्ट:
पपट्ठ| पवट्ठ:
पपठ्ठ| पवठ्ठ:
पपड्ढ| पवड्ढ:
पपड्ड| पवड्ड:
पपढ्ढ| पवढ्ढ:
पपद्घ| पवद्घ:
पपद्न| पवद्न:
पपद्ब| पवद्ब:
पपद्भ| पवद्भ:
पपद्म| पवद्म:
पपद्ध| पवद्ध:
पपद्द| पवद्द:
पपष्ट| पवष्ट:
पपन्भ| पवन्भ:
पपष्ठ| पवष्ठ:
पपल्ज| पवल्ज:
पपह्ण| पवह्ण:
पपह्न| पवह्न:
पपह्ल| पवह्ल:
पपह्व| पवह्व:

पपहु| पवहु:
पपहू| पवहू:
पपहृ| पवहृ:
पपहॄ| पवहॄ:
पपह्लु| पवह्लु:
पपह्लू| पवह्लू:
पपरु| पवरु:
पपरू| पवरू:
पपदु| पवदु:
पपदू| पवदू:
पपदृ| पवदृ:

-
पपक! पवक?
पपख! पवख?
पपग! पवग?
पपघ! पवघ?
पपङ! पवङ?
पपच! पवच?
पपछ! पवछ?
पपज! पवज?
पपझ! पवझ?
पपञ! पवञ?
पपट! पवट?
पपठ! पवठ?
पपड! पवड?
पपढ! पवढ?
पपण! पवण?
पपत! पवत?
पपथ! पवथ?
पपद! पवद?
पपध! पवध?
पपन! पवन?
पपप! पवप?
पपफ! पवफ?
पपब! पवब?
पपभ! पवभ?
पपम! पवम?
पपय! पवय?
पपर! पवर?
पपल! पवल?
पपळ! पवळ?

पपव! पवव?
पपश! पवश?
पपष! पवष?
पपस! पवस?
पपह! पवह?
पपक़! पवक़?
पपख़! पवख़?
पपग़! पवग़?
पपज़! पवज़?
पपड़! पवड़?
पपढ़! पवढ़?
पपफ़! पवफ़?
पपय़! पवय़?
पपक्ष! पवक्ष?
पपज्ञ! पवज्ञ?

पपअ! पवअ?
पपऄ! पवऄ?
पपॲ! पवॲ?
पपइ! पवइ?
पपई! पवई?
पपउ! पवउ?
पपऊ! पवऊ?
पपए! पवए?
पपऐ! पवऐ?
पपऍ! पवऍ?
पपऎ! पवऎ?
पपआ! पवआ?
पपओ! पवओ?
पपऔ! पवऔ?
पपऋ! पवऋ?
पपॠ! पवॠ?
पपऌ! पवऌ?
पपॡ! पवॡ?

पपङ्र! पवङ्र?
पपछ्र! पवछ्र?
पपट्र! पवट्र?
पपठ्र! पवठ्र?
पपड्र! पवड्र?
पपढ्र! पवढ्र?
पपद्र! पवद्र?
पपर्! पवर्?
पपह्र! पवह्र?
पपळ्र! पवळ्र?

पपत्त! पवत्त?
पपऱु! पवऱु?
पपऱू! पवऱू?
पपट्ट! पवट्ट?
पपट्ठ! पवट्ठ?
पपठ्ठ! पवठ्ठ?
पपड्ढ! पवड्ढ?
पपड्ड! पवड्ड?
पपढ्ढ! पवढ्ढ?
पपद्ध! पवद्ध?
पपद्न! पवद्न?
पपद्ब! पवद्ब?
पपद्भ! पवद्भ?
पपद्व! पवद्व?
पपद्घ! पवद्घ?
पपद्द! पवद्द?
पपष्ट! पवष्ट?
पपन्भ! पवन्भ?
पपष्ठ! पवष्ठ?
पपल्ज! पवल्ज?
पपह्ण! पवह्ण?
पपह्न! पवह्न?
पपह्ल! पवह्ल?
पपह्व! पवह्व?

पपहु! पवहु?
पपहू! पवहू?
पपहृ! पवहृ?
पपहॄ! पवहॄ?
पपहु! पवहु?
पपहू! पवहू?
पपरु! पवरु?
पपरू! पवरू?
पपदु! पवदु?
पपदू! पवदू?
पपदृ! पवदृ?

-
पपक–कपव
पपख–खपव
पपग–गपव
पपघ–घपव
पपङ–ङपव
पपच–चपव
पपछ–छपव
पपज–जपव
पपझ–झपव
पपञ–ञपव
पपट–टपव
पपठ–ठपव
पपड–डपव
पपढ–ढपव
पपण–णपव
पपत–तपव
पपथ–थपव
पपद–दपव
पपध–धपव
पपन–नपव
पपप–पपव

पपफ–फपव
पपब–बपव
पपभ–भपव
पपम–मपव
पपय–यपव
पपर–रपव
पपल–लपव
पपळ–ळपव
पपव–वपव
पपश–शपव
पपष–षपव
पपस–सपव
पपह–हपव
पपक़–क़पव
पपख़–ख़पव
पपग़–ग़पव
पपज़–ज़पव
पपड़–ड़पव
पपढ़–ढ़पव
पपफ़–फ़पव
पपय़–य़पव
पपक्ष–क्षपव
पपज्ञ–ज्ञपव

पपअ–अपव
पपऄ–ऄपव
पपॲ–ॲपव
पपइ–इपव
पपई–ईपव
पपउ–उपव
पपऊ–ऊपव
पपए–एपव
पपऐ–ऐपव
पपऍ–ऍवव
पपऎ–ऎपव

पपआ–आपव
पपओ–ओपव
पपऔ–औपव
पपऋ–ऋपव
पपॠ–ॠपव
पपऌ–ऌपव
पपॡ–ॡपव

पपङ्र–ङ्रपव
पपछ्र–छ्रपव
पपट्र–ट्रपव
पपठ्र–ठ्रपव
पपड्र–ड्रपव
पपढ्र–ढ्रपव
पपद्र–द्रपव
पपर्–र्पव
पपह्र–ह्रपव
पपळ्र–ळ्रपव

पपत्त–त्तपव
पपऱु–ऱुपव
पपऱू–ऱूपव
पपट्ट–ट्टपव
पपट्ठ–ट्ठपव
पपठ्ठ–ठ्ठपव
पपड्ढ–ड्ढपव
पपड्ड–ड्डपव
पपढ्ढ–ढ्ढपव
पपद्ध–द्धपव
पपद्न–द्नपव
पपद्ब–द्बपव
पपद्भ–द्भपव
पपद्व–द्वपव
पपद्घ–द्घपव

पपद्द–द्दपव
पपष्ट–ष्टपव
पपन्भ–न्भपव
पपष्ठ–ष्ठपव
पपल्ज–ल्जपव
पपह्ण–ह्णपव
पपह्न–ह्नपव
पपह्ल–ह्लपव
पपह्व–ह्वपव

पपहु–हुपव
पपहू–हूपव
पपहृ–हृपव
पपहॄ–हॄपव
पपहु–हुपव
पपहू–हूपव
पपरु–रुपव
पपरू–रूपव
पपदु–दुपव
पपदू–दूपव
पपदृ–दृपव

-
"कपवपक"
"खपवपख"
"गपवपग"
"घपवपघ"
"ङपवपङ"
"चपवपच"
"छपवपछ"
"जपवपज"
"झपवपझ"
"ञपवपञ"
"टपवपट"
"ठपवपठ"

"डपवपड"
"ढपवपढ"
"णपवपण"
"तपवपत"
"थपवपथ"
"दपवपद"
"धपवपध"
"नपवपन"
"पपवपप"
"फपवपफ"
"बपवपब"
"भपवपभ"
"मपवपम"
"यपवपय"
"रपवपर"
"लपवपल"
"ळपवपळ"
"वपवपव"
"शपवपश"
"षपवपष"
"सपवपस"
"हपवपह"
"क़पवपक़"
"ख़पवपख़"
"ग़पवपग़"
"ज़पवपज़"
"ड़पवपड़"
"ढ़पवपढ़"
"फ़पवपफ़"
"य़पवपय़"
"क्षपवपक्ष"
"ज्ञपवपज्ञ"

"अपवपअ"
"ऄपवपऄ"

"ॲपवपॲ"
"इपवपइ"
"ईपवपई"
"उपवपउ"
"ऊपवपऊ"
"एपवपए"
"ऐपवपऐ"
"ऍपवपऍवव"
"ऑपवपऑ"
"आपवपआ"
"ओपवपओ"
"औपवपऔ"
"ऋपवपऋ"
"ॠपवपॠ"
"ऌपवपऌ"
"ॡपवपॡ"

"ङ्गपवपङ्ग"
"छ्रपवपछ्र"
"ट्रपवपट्र"
"ठ्रपवपठ्र"
"ड्रपवपड्र"
"ढ्रपवपढ्र"
"द्रपवपद्र"
"ऱ्पवपऱ्"
"ह्रपवपह्र"
"ळ्रपवपळ्र"

"त्तपवपत्त"
"ऱुपवपऱु"
"ऱूपवपऱू"
"ट्टपवपट्ट"
"ट्ठपवपट्ठ"
"ठ्ठपवपठ्ठ"
"ड्ढपवपड्ढ"

"ड्डपवपड्ड"
"ढ्ढपवपढ्ढ"
"द्धपवपद्ध"
"द्नपवपद्न"
"द्बपवपद्ब"
"द्भपवपद्भ"
"द्वपवपद्व"
"द्धपवपद्ध"
"द्दपवपद्द"
"ष्टपवपष्ट"
"न्भपवपन्भ"
"ष्ठपवपष्ठ"
"ल्जपवपल्ज"
"ह्णपवपह्ण"
"ह्नपवपह्न"
"ह्लपवपह्ल"
"ह्वपवपह्व"

"हुपवपहु"
"हूपवपहू"
"हृपवपहृ"
"हॄपवपहॄ"
"ह्रुपवपह्रु"
"ह्रूपवपह्रू"
"रुपवपरु"
"रूपवपरू"
"दुपवपदु"
"दूपवपदू"
"दृपवपदृ"

Num-punct spacing

पवप ₹१०१ वपव
पवप ₹२०१ वपव
पवप ₹३०१ वपव
पवप ₹४०१ वपव
पवप ₹५०१ वपव
पवप ₹६०१ वपव
पवप ₹७०१ वपव
पवप ₹८०१ वपव
पवप ₹९०१ वपव

०००,०१०,०११
००१,०१०,१११
००२,०१०,२११
००३,०१०,३११
००४,०१०,४११
००५,०१०,५११
००६,०१०,६११
००७,०१०,७११
००८,०१०,८११
००९,०१०,९११

०००.०१०.०११
००१.०१०.१११
००२.०१०.२११
००३.०१०.३११
००४.०१०.४११
००५.०१०.५११
००६.०१०.६११
००७.०१०.७११
००८.०१०.८११
००९.०१०.९११

Ii Vowel sign - base

पपकिपपकिंपपर्किपप
पपखिपपखिंपपर्खिपप
पपगिपपगिंपपर्गिपप
पपघिपपघिंपपर्घिपप
पपङिपपङिंपपर्ङिपप
पपचिपपचिंपपर्चिपप
पपछिपपछिंपपर्छिपप
पपजिपपजिंपपर्जिपप
पपझिपपझिंपपर्झिपप
पपञिपपञिंपपर्ञिपप
पपटिपपटिंपपर्टिपप
पपठिपपठिंपपर्ठिपप
पपडिपपडिंपपर्डिपप
पपढिपपढिंपपर्ढिपप
पपणिपपणिंपपर्णिपप
पपतिपपतिंपपर्तिपप
पपथिपपथिंपपर्थिपप
पपदिपपदिंपपर्दिपप
पपधिपपधिंपपर्धिपप
पपनिपपनिंपपर्निपप
पपपिपपपिंपपर्पिपप
पपफिपपफिंपपर्फिपप
पपबिपपबिंपपर्बिपप
पपभिपपभिंपपर्भिपप
पपमिपपमिंपपर्मिपप
पपयिपपयिंपपर्यिपप
पपरिपपरिंपपर्रिपप
पपलिपपलिंपपर्लिपप
पपळिपपळिंपपर्ळिपप
पपविपपविंपपर्विपप
पपशिपपशिंपपर्शिपप
पपषिपपषिंपपर्षिपप
पपसिपपसिंपपर्सिपप
पपहिपपहिंपपर्हिपप
पपक्षिपपक्षिंपपर्क्षिपप
पपज्ञिपपज्ञिंपपर्ज्ञिपप

Ii Vowel sign clusters

पपक्कीपप
पपक्खीपप
पपक्गीपप
पपक्चीपप
पपक्छीपप
पपक्जीपप
पपक्झीपप
पपक्टीपप
पपक्ठीपप
पपक्डीपप
पपक्ढीपप
पपक्णीपप
पपक्तीपप
पपक्थीपप
पपक्दीपप
पपक्नीपप
पपक्पीपप
पपक्फीपप
पपक्बीपप
पपक्भीपप
पपक्मीपप
पपक्यीपप
पपक्रीपप
पपक्लीपप
पपक्वीपप
पपक्शीपप
पपक्षीपप
पपक्सीपप
पपक्हीपप
पपक्ळीपप
पपक्क्यीपप
पपक्त्रीपप
पपक्त्यीपप

पपक्त्वीपप
पपक्व्यीपप
पपक्स्टीपप
पपक्स्डीपप
पपक्स्तीपप
पपक्स्पीपप
पपक्स्प्रीपप
पपक्प्रीपप
पपक्स्प्लीपप
पपख्खीपप
पपख्टीपप
पपख्ठीपप
पपख्णीपप
पपख्तीपप
पपख्दीपप
पपख्नीपप
पपख्पीपप
पपख्मीपप
पपख्यीपप
पपख्रीपप
पपख्लीपप
पपख्वीपप
पपख्शीपप
पपख्षीपप
पपख्म्यीपप
पपख्त्यीपप
पपग्कीपप
पपग्गीपप
पपग्जीपप
पपग्णीपप
पपग्तीपप
पपग्दीपप
पपग्धीपप
पपग्नीपप
पपग्बीपप

पपग्भीपप
पपग्मीपप
पपग्यीपप
पपग्रीपप
पपग्लीपप
पपग्वीपप
पपग्सीपप
पपग्ध्यीपप
पपग्ध्वीपप
पपग्न्यीपप
पपग्भ्यीपप
पपग्र्यीपप
पपग्म्यीपप
पपग्ल्यीपप
पपघ्घीपप
पपघ्जीपप
पपघ्टीपप
पपघ्ठीपप
पपघ्डीपप
पपघ्णीपप
पपघ्तीपप
पपघ्दीपप
पपघ्नीपप
पपघ्बीपप
पपघ्मीपप
पपघ्यीपप
पपघ्रीपप
पपघ्लीपप
पपघ्वीपप
पपघ्सीपप
पपघ्ल्यीपप
पपङ्कीपप
पपङ्कीपप
पपङ्खीपप
पपङ्खीपप

पपङ्गीपप
पपङ्गीपप
पपङ्घीपप
पपङ्घीपप
पपङ्चीपप
पपङ्क्षीपप
पपङ्क्रीपप
पपङ्क्रीपप
पपङ्मीपप
पपङ्ञ्यीपप
पपङ्रीपप
पपच्कीपप
पपच्खीपप
पपच्चीपप
पपच्टीपप
पपच्ठीपप
पपच्छीपप
पपच्ढीपप
पपच्णीपप
पपच्तीपप
पपच्थीपप
पपच्दीपप
पपच्धीपप
पपच्नीपप
पपच्यीपप
पपच्रीपप
पपच्लीपप
पपच्वीपप
पपच्सीपप
पपच्पीपप
पपच्मीपप
पपच्च्यीपप
पपछ्यीपप
पपछ्रीपप
पपछ्र्वीपप

पपज्कीपप
पपज्जीपप
पपज्झीपप
पपज्ञीपप
पपज्तीपप
पपज्दीपप
पपज्नीपप
पपज्बीपप
पपज्मीपप
पपज्यीपप
पपज्रीपप
पपज्लीपप
पपज्वीपप
पपझ्कीपप
पपझ्गीपप
पपझ्घीपप
पपझ्झीपप
पपझ्तीपप
पपझ्नीपप
पपझ्यीपप
पपझ्रीपप
पपझ्लीपप
पपझ्वीपप
पपझ्मीपप
पपञ्चीपप
पपञ्जीपप
पपञ्शीपप
पपञ्ज्यीपप
पपञ्ज्र्यीपप
पपट्टीपप
पपट्टीपप
पपट्ठीपप
पपट्ठीपप
पपट्यीपप
पपट्रीपप

पपट्रीपप
पपट्वीपप
पपट्वीपप
पपठ्ठीपप
पपठ्ठीपप
पपठ्रीपप
पपठ्ठ्यीपप
पपड्डीपप
पपड्डीपप
पपड्रीपप
पपड्ड्यीपप
पपढ्ढीपप
पपढ्ढीपप
पपढ्रीपप
पपढ्यीपप
पपढ्ढ्यीपप
पपण्टीपप
पपण्टीपप
पपण्ठीपप
पपण्डीपप
पपण्ढीपप
पपण्णीपप
पपण्तीपप
पपण्यीपप
पपण्रीपप
पपण्वीपप
पपत्कीपप
पपत्खीपप
पपत्तीपप
पपत्थीपप
पपत्नीपप
पपत्पीपप
पपत्फीपप
पपत्बीपप
पपत्भीपप

पपत्मीपप
पपत्यीपप
पपत्रीपप
पपत्लीपप
पपत्वीपप
पपत्सीपप
पपत्क्यीपप
पपत्क्रीपप
पपत्क्षीपप
पपत्ख्नीपप
पपत्ख्रीपप
पपत्ख्रीपप
पपत्न्यीपप
पपत्प्रीपप
पपत्प्लीपप
पपत्म्यीपप
पपत्स्नीपप
पपत्स्यीपप
पपत्स्वीपप
पपत्स्न्यीपप
पपथ्कीपप
पपथ्थीपप
पपथ्मीपप
पपथ्यीपप
पपथ्रीपप
पपथ्लीपप
पपथ्वीपप
पपथ्सीपप
पपद्गीपप
पपद्घीपप
पपद्दीपप
पपद्धीपप
पपद्धीपप
पपद्भीपप
पपद्मीपप

पपद्यीपप
पपद्रीपप
पपद्वीपप
पपद्ध्यीपप
पपद्व्रीपप
पपद्य्यीपप
पपध्कीपप
पपध्धीपप
पपध्नीपप
पपध्यीपप
पपध्रीपप
पपध्लीपप
पपध्वीपप
पपध्सीपप
पपन्कीपप
पपन्खीपप
पपन्चीपप
पपन्छीपप
पपन्जीपप
पपन्झीपप
पपन्टीपप
पपन्ठीपप
पपन्डीपप
पपन्ढीपप
पपन्तीपप
पपन्थीपप
पपन्दीपप
पपन्धीपप
पपन्नीपप
पपन्पीपप
पपन्फीपप
पपन्बीपप
पपन्भीपप
पपन्मीपप
पपन्यीपप

पपर्न्त्रिपप
पपर्न्लिपप
पपर्न्विपप
पपर्न्सिपप
पपर्न्हिपप
पपर्न्भ्यिपप
पपर्न्भ्विपप
पपर्न्म्यिपप
पपर्न्स्टिपप
पपर्न्स्यिपप
पपर्न्ह्यिपप
पपर्न्ज्यिपप
पपर्न्क्सिपप
पपर्न्त्यिपप
पपर्न्त्सिपप
पपर्न्थ्यिपप
पपर्न्थ्विपप
पपर्न्द्रिपप
पपर्न्द्विपप
पपर्न्ध्यिपप
पपर्न्ध्रिपप
पपर्न्प्रिपप
पपर्न्स्म्यिपप
पपर्प्किपप
पपर्प्झिपप
पपर्प्टिपप
पपर्प्ठिपप
पपर्प्टीपप
पपर्प्डिपप
पपर्प्ढिपप
पपर्प्णिपप
पपर्प्तिपप
पपर्प्थिपप
पपर्प्दिपप
पपर्प्धिपप
पपर्प्निपप
पपर्प्पिपप
पपर्प्फिपप
पपर्प्मिपप
पपर्प्यिपप
पपर्प्रिपप
पपर्प्लिपप
पपर्प्विपप
पपर्प्षिपप
पपर्प्सिपप
पपर्प्ळिपप
पपर्प्त्यिपप
पपर्फ्किपप
पपर्फ्जिपप
पपर्फ्टिपप
पपर्फ्तिपप
पपर्फ्दिपप
पपर्फ्निपप
पपर्फ्फिपप
पपर्फ्मिपप
पपर्फ्यिपप
पपर्फ्रिपप
पपर्फ्लिपप
पपर्फ्शिपप
पपर्भ्निपप
पपर्भ्यिपप
पपर्भ्रिपप
पपर्भ्लिपप
पपर्भ्विपप
पपर्भ्र्यिपप
पपर्म्तिपप
पपर्म्दिपप
पपर्म्निपप
पपर्म्पिपप
पपर्म्बिपप
पपर्म्भिपप
पपर्म्मिपप
पपर्म्यिपप
पपर्म्रिपप
पपर्म्लिपप
पपर्म्विपप
पपर्म्शिपप
पपर्म्सिपप
पपर्म्हिपप
पपर्म्म्यिपप
पपर्म्प्रिपप
पपर्म्ब्यिपप
पपर्म्ब्रिपप
पपर्म्भ्यिपप
पपर्म्भ्रिपप
पपर्म्भ्विपप
पपर्य्यिपप
पपर्य्रिपप
पपर्व्निपप
पपर्व्यिपप
पपर्व्रिपप
पपर्व्लिपप
पपर्व्सिपप
पपर्व्हिपप
पपर्ल्किपप
पपर्ल्खिपप
पपर्ल्गिपप
पपर्ल्चिपप
पपर्ल्जिपप
पपर्ल्टिपप
पपर्ल्ठिपप
पपर्ल्डिपप
पपर्ल्ढिपप
पपर्ल्तिपप
पपर्ल्थिपप
पपर्ल्दिपप
पपर्ल्पिपप
पपर्ल्फिपप
पपर्ल्बिपप
पपर्ल्भिपप
पपर्ल्मिपप
पपर्ल्यिपप
पपर्ल्रिपप
पपर्ल्विपप
पपर्ल्सिपप
पपर्ल्हिपप
पपर्ल्ल्यिपप
पपर्ल्ह्यिपप
पपर्ल्क्यिपप
पपर्ल्थ्यिपप
पपर्ल्द्रिपप
पपर्श्किपप
पपर्श्खिपप
पपर्श्चिपप
पपर्श्छिपप
पपर्श्टिपप
पपर्श्तिपप
पपर्श्निपप
पपर्श्बिपप
पपर्श्मिपप
पपर्श्यिपप
पपर्श्रिपप
पपर्श्लिपप
पपर्श्विपप
पपर्श्शिपप
पपर्श्र्यिपप
पपर्स्किपप
पपर्स्खिपप
पपर्स्छिपप
पपर्स्जिपप
पपर्स्टिपप
पपर्स्ठिपप
पपर्स्डिपप
पपर्स्ढिपप
पपर्स्तिपप
पपर्स्थिपप
पपर्स्दिपप
पपर्स्निपप
पपर्स्पिपप
पपर्स्फिपप
पपर्स्बिपप
पपर्स्मिपप
पपर्स्यिपप
पपर्स्रिपप
पपर्स्लिपप
पपर्स्विपप
पपर्स्सिपप
पपर्स्म्यिपप
पपर्स्क्रिपप
पपर्स्त्यिपप
पपर्स्थ्यिपप
पपर्स्म्यिपप
पपर्स्त्विपप
पपर्स्प्रिपप
पपर्स्न्यिपप
पपर्ह्णिपप
पपर्ह्तिपप
पपर्ह्यिपप
पपर्ह्मिपप
पपर्ह्म्यिपप
पपर्ह्निपप
पपर्ह्रिपप
पपर्ह्लिपप
पपर्ह्निपप
पपर्ह्विपप
पपर्ळ्यिपप
पपर्ळ्पिपप
पपर्ळ्विपप
पपर्क्ष्यिपप
पपर्क्ष्मिपप
पपर्क्ष्विपप

Half-to-base kerns

पपक्कपपक्खपपक्गपपक्घपपक्ङपपक्चप
पक्छपपक्जपपक्झपपक्ञपपक्टपपक्ठपपक्डप
पक्ढपपक्णपपक्तपपक्थपपक्दपपक्धपपक्नप
पक्ऩपपक्पपपक्फपपक्बपपक्भपपक्मपपक्यप
पक्रपपक्ऱपपक्लपपक्ळपपक्ऴपपक्वप
पक्शपपक्षपपक्सपपक्हपपक्क़पपक्ख़पपक्ग़प
पक्ज़पपक्ड़पपक्ढ़पपक्फ़पपक्य़पप

पपख्कपपख्खपपख्गपपख्घपपख्ङपपख्चप
पख्छपपख्जपपख्झपपख्ञपपख्टपपख्ठपपख्डप
पख्ढपपख्णपपख्तपपख्थपपख्दपपख्धपपख्नप
पख्ऩपपख्पपपख्फपपख्बपपख्भपपख्मपपख्यप
पख्रपपख्ऱपपख्लपपख्ळपपख्ऴपपख्वपपख्शप
पख्षपपख्सपपख्हपपख्क़पपख्ख़पपख्ग़पपख्ज़प
पख्ड़पपख्ढ़पपख्फ़पपख्य़पप

पपग्कपपग्खपपग्गपपग्घपपग्ङपपग्चप
पग्छपपग्जपपग्झपपग्ञपपग्टपपग्ठपपग्डप
पग्ढपपग्णपपग्तपपग्थपपग्दपपग्धपपग्नप
पग्ऩपपग्पपपग्फपपग्बपपग्भपपग्मपपग्यपपग्रप
पग्ऱपपग्लपपग्ळपपग्ऴपपग्वपपग्शपपग्षप
पग्सपपग्हपपग्क़पपग्ख़पपग्ग़पपग्ज़पपग्ड़प
पग्ढ़पपग्फ़पपग्य़पप

पपघ्कपपघ्खपपघ्गपपघ्घपपघ्ङपपघ्चप
पघ्छपपघ्जपपघ्झपपघ्ञपपघ्टपपघ्ठपपघ्डप
पघ्ढपपघ्णपपघ्तपपघ्थपपघ्दपपघ्धपपघ्नप
पघ्ऩपपघ्पपपघ्फपपघ्बपपघ्भपपघ्मपपघ्यप
पघ्रपपघ्ऱपपघ्लपपघ्ळपपघ्ऴपपघ्वप
पघ्शपपघ्षपपघ्सपपघ्हपपघ्क़पपघ्ख़पपघ्ग़प
पघ्ज़पपघ्ड़पपघ्ढ़पपघ्फ़पपघ्य़पप

पपच्कपपच्खपपच्गपपच्घपपच्ङपपच्चप
पच्छपपच्जपपच्झपपच्ञपपच्टपपच्ठपपच्डप
पच्ढपपच्णपपच्तपपच्थपपच्दपपच्धपपच्नप
पच्ऩपपच्पपपच्फपपच्बपपच्भपपच्मपपच्यप
पच्रपपच्ऱपपच्लपपच्ळपपच्ऴपपच्वपपच्शप
पच्षपपच्सपपच्हपपच्क़पपच्ख़पपच्ग़पपच्ज़प
पच्ड़पपच्ढ़पपच्फ़पपच्य़पप

पपछकपपछखपपछगपपछघपपछङपपछचप
पछछपपछजपपछझपपछञपपछटपपछठप
पछडपपछढपपछणपपछतपपछथपपछदप
पछधपपछनपपछऩपपछपपपछफपपछबप
पछभपपछमपपछ्यपपछ्रपपछ्ऱपपछलप
पछळपपछऴपपछवपपछशपपछषपपछसप
पछहपपछक़पपछख़पपछग़पपछज़पपछड़प
पछढ़पपछफ़पपछय़पप

पपज्कपपज्खपपज्गपपज्घपपज्ङपपज्चप
पज्छपपज्जपपज्झपपज्ञपपज्टपपज्ठपपज्डप
पज्ढपपज्णपपज्तपपज्थपपज्दपपज्धपपज्नप
पज्ऩपपज्पपपज्फपपज्बपपज्भपपज्मपपज्यप
पज्रपपज्ऱपपज्लपपज्ळपपज्ऴपपज्वपपज्शप
पज्षपपज्सपपज्हपपज्क़पपज्ख़पपज्ग़पपज्ज़प
पज्ड़पपज्ढ़पपज्फ़पपज्य़पप

पपझ्कपपझ्खपपझ्गपपझ्घपपझ्ङपपझ्चप
पझ्छपपझ्जपपझ्झपपझ्ञपपझ्टपपझ्ठपपझ्डप
पझ्ढपपझ्णपपझ्तपपझ्थपपझ्दपपझ्धपपझ्नप
पझ्ऩपपझ्पपपझ्फपपझ्बपपझ्भपपझ्मपपझ्यप
पझ्रपपझ्ऱपपझ्लपपझ्ळपपझ्ऴपपझ्वपपझ्शप
पझ्षपपझ्सपपझ्हपपझ्क़पपझ्ख़पपझ्ग़पपझ्ज़प
पझ्ड़पपझ्ढ़पपझ्फ़पपझ्य़पप

पपञ्कपपञ्खपपञ्गपपञ्घपपञ्ङपपञ्चप
पञ्छपपञ्जपपञ्झपपञ्ञपपञ्टपपञ्ठपपञ्डप
पञ्ढपपञ्णपपञ्तपपञ्थपपञ्दपपञ्धपपञ्नप
पञ्ऩपपञ्पपपञ्फपपञ्बपपञ्भपपञ्मपपञ्यप
पञ्रपपञ्ऱपपञ्लपपञ्ळपपञ्ऴपपञ्वपपञ्शप
पञ्षपपञ्सपपञ्हपपञ्क़पपञ्ख़पपञ्ग़पपञ्ज़प
पञ्ड़पपञ्ढ़पपञ्फ़पपञ्य़पप

पपट्कपपट्खपपट्गपपट्घपपट्ङपपट्चप
पट्छपपट्जपपट्झपपट्ञपपट्टपपट्ठपपट्डप
पट्ढपपट्णपपट्तपपट्थपपट्दपपट्धपपट्नप
पट्ऩपपट्पपपट्फपपट्बपपट्भपपट्मपपट्यप
पट्रपपट्ऱपपट्लपपट्ळपपट्ऴपपट्वपपट्शप
पट्षपपट्सपपट्हपपट्क़पपट्ख़पपट्ग़पपट्ज़प
पट्ड़पपट्ढ़पपट्फ़पपट्य़पप

पपठ्कपपठ्खपपठ्गपपठ्घपपठ्ङपपठ्चप
पठ्छपपठ्जपपठ्झपपठ्ञपपठ्टपपठ्ठपपठ्डप
पठ्ढपपठ्णपपठ्तपपठ्थपपठ्दपपठ्धपपठ्नप
पठ्ऩपपठ्पपपठ्फपपठ्बपपठ्भपपठ्मपपठ्यप
पठ्रपपठ्ऱपपठ्लपपठ्ळपपठ्ऴपपठ्वपपठ्शप
पठ्षपपठ्सपपठ्हपपठ्क़पपठ्ख़पपठ्ग़पपठ्ज़प
पठ्ड़पपठ्ढ़पपठ्फ़पपठ्य़पप

पपड्कपपड्खपपड्गपपड्घपपड्ङपपड्चप
पड्छपपड्जपपड्झपपड्ञपपड्टपपड्ठपपड्डप
पड्ढपपड्णपपड्तपपड्थपपड्दपपड्धपपड्नप
पड्ऩपपड्पपपड्फपपड्बपपड्भपपड्मपपड्यप
पड्रपपड्ऱपपड्लपपड्ळपपड्ऴपपड्वपपड्शप
पड्षपपड्सपपड्हपपड्क़पपड्ख़पपड्ग़पपड्ज़प
पड्ड़पपड्ढ़पपड्फ़पपड्य़पप

पपढ़्कपपढ़्खपपढ़्गपपढ़्घपपढ़्ङपपढ़्चप
पढ़्छपपढ़्जपपढ़्झपपढ़्ञपपढ़्टपपढ़्ठपपढ़्डप
पढ़्ढपपढ़्णपपढ़्तपपढ़्थपपढ़्दपपढ़्धपपढ़्नप
पढ़्ऩपपढ़्पपपढ़्फपपढ़्बपपढ़्भपपढ़्मपपढ़्यप
पढ़्रपपढ़्ऱपपढ़्लपपढ़्ळपपढ़्ऴपपढ़्वपपढ़्शप
पढ़्षपपढ़्सपपढ़्हपपढ़्क़पपढ़्ख़पपढ़्ग़पपढ़्ज़प
पढ़्ड़पपढ़्ढ़पपढ़्फ़पपढ़्य़पप

पपण्कपपण्खपपण्गपपण्घपपण्ङपपण्चप
पण्छपपण्जपपण्झपपण्ञपपण्टपपण्ठपपण्डप
पण्ढपपण्णपपण्तपपण्थपपण्दपपण्धपपण्नप
पण्ऩपपण्पपपण्फपपण्बपपण्भपपण्मपपण्यप
पण्रपपण्ऱपपण्लपपण्ळपपण्ऴपपण्वपपण्शप
पण्षपपण्सपपण्हपपण्क़पपण्ख़पपण्ग़पपण्ज़प
पण्ड़पपण्ढ़पपण्फ़पपण्य़पप

पपत्कपपत्खपपत्गपपत्घपपत्ङपपत्चपपत्छप
पत्जपपत्झपपत्ञपपत्टपपत्ठपपत्डपपत्ढपपत्णप
पत्तपपत्थपपत्दपपत्धपपत्नपपत्ऩपपत्पपपत्फप
पत्बपपत्भपपत्मपपत्यपपत्रपपत्ऱपपत्लपपत्ळप
पत्ऴपपत्वपपत्शपपत्षपपत्सपपत्हपपत्क़पपत्ख़प
पत्ग़पपत्ज़पपत्ड़पपत्ढ़पपत्फ़पपत्य़पप

पपथ्कपपथ्खपपथ्गपपथ्घपपथ्ङपपथ्चपपथ्छप
पथ्जपपथ्झपपथ्ञपपथ्टपपथ्ठपपथ्डपपथ्ढप
पथ्णपपथ्तपपथ्थपपथ्दपपथ्धपपथ्नपपथ्ऩप
पथ्पपपथ्फपपथ्बपपथ्भपपथ्मपपथ्यपपथ्रप
पथ्ऱपपथ्लपपथ्ळपपथ्ऴपपथ्वपपथ्शपपथ्षप
पथ्सपपथ्हपपथ्क़पपथ्ख़पपथ्ग़पपथ्ज़पपथ्ड़प
पथ्ढ़पपथ्फ़पपथ्य़पप

पपद्कपपद्खपपद्गपपद्घपपद्ङपपद्चप
पद्छपपद्जपपद्झपपद्ञपपद्टपपद्ठप
पद्डपपद्ढपपद्णपपद्तपपद्थपपद्दपपद्धप
पद्नपपद्ऩपपद्पपपद्फपपद्बपपद्भपपद्मप
पद्यपपद्रपपद्ऱपपद्लपपद्ळपपद्ऴपपद्वप
पद्शपपद्षपपद्सपपद्हपपद्क़पपद्ख़प
पद्ग़पपद्ज़पपद्ड़पपद्ढ़पपद्फ़पपद्य़पप

पपध्कपपध्खपपध्गपपध्घपपध्ङपपध्चप
पध्छपपध्जपपध्झपपध्ञपपध्टपपध्ठपपध्डप
पध्ढपपध्णपपध्तपपध्थपपध्दपपध्धपपध्नप
पध्ऩपपध्पपपध्फपपध्बपपध्भपपध्मपपध्यप
पध्रपपध्ऱपपध्लपपध्ळपपध्ऴपपध्वपपध्शप
पध्षपपध्सपपध्हपपध्क़पपध्ख़पपध्ग़पपध्ज़प
पध्ड़पपध्ढ़पपध्फ़पपध्य़पप

पपन्कपपन्खपपन्गपपन्घपपन्ङपपन्चपपन्छप
पन्जपपन्झपपन्ञपपन्टपपन्ठपपन्डपपन्ढप
पन्णपपन्तपपन्थपपन्दपपन्धपपन्नपपन्ऩपपन्पप
पन्फपपन्बपपन्भपपन्मपपन्यपपन्रपपन्ऱपपन्लप
पन्ळपपन्ऴपपन्वपपन्शपपन्षपपन्सपपन्हपपन्क़प
पन्ख़पपन्ग़पपन्ज़पपन्ड़पपन्ढ़पपन्फ़पपन्य़पप

पपऩ्कपपऩ्खपपऩ्गपपऩ्घपपऩ्ङपपऩ्चपपऩ्छप
पऩ्जपपऩ्झपपऩ्ञपपऩ्टपपऩ्ठपपऩ्डपपऩ्ढप
पऩ्णपपऩ्तपपऩ्थपपऩ्दपपऩ्धपपऩ्नपपऩ्ऩपपऩ्पप
पऩ्फपपऩ्बपपऩ्भपपऩ्मपपऩ्यपपऩ्रपपऩ्ऱपपऩ्लप
पऩ्ळपपऩ्ऴपपऩ्वपपऩ्शपपऩ्षपपऩ्सपपऩ्हपपऩ्क़प
पऩ्ख़पपऩ्ग़पपऩ्ज़पपऩ्ड़पपऩ्ढ़पपऩ्फ़पपऩ्य़पप

पपप्कपपप्खपपप्गपपप्घपपप्ङपपप्चपपप्छप
पप्जपपप्झपपप्ञपपप्टपपप्ठपपप्डपपप्ढपपप्णप
पप्तपपप्थपपप्दपपप्धपपप्नपपप्ऩपपप्पपपप्फप
पप्बपपप्भपपप्मपपप्यपपप्रपपप्ऱपपप्लपपप्ळप
पप्ऴपपप्वपपप्शपपप्षपपप्सपपप्हपपप्क़पपप्ख़प
पप्ग़पपप्ज़पपप्ड़पपप्ढ़पपप्फ़पपप्य़पप

पपफ्कपपफ्खपपफ्गपपफ्घपपफ्ङपपफ्चप
पफ्छपपफ्जपपफ्झपपफ्ञपपफ्टपपफ्ठपपफ्डप
पफ्ढपपफ्णपपफ्तपपफ्थपपफ्दपपफ्धपपफ्नप
पफ्ऩपपफ्पपपफ्फपपफ्बपपफ्भपपफ्मपपफ्यप
पफ्रपपफ्ऱपपफ्लपपफ्ळपपफ्ऴपपफ्वपपफ्शप
पफ्षपपफ्सपपफ्हपपफ्क़पपफ्ख़पपफ्ग़पपफ्ज़प
पफ्ड़पपफ्ढ़पपफ्फ़पपफ्य़पप

पपब्कपपब्खपपब्गपपब्घपपब्ङपपब्चपपब्छप
पब्जपपब्झपपब्ञपपब्टपपब्ठपपब्डपपब्ढपपब्णप
पब्तपपब्थपपब्दपपब्धपपब्नपपब्ऩपपब्पपपब्फप
पब्बपपब्भपपब्मपपब्यपपब्रपपब्ऱपपब्लपपब्ळप
पब्ऴपपब्वपपब्शपपब्षपपब्सपपब्हपपब्क़पपब्ख़प
पब्ग़पपब्ज़पपब्ड़पपब्ढ़पपब्फ़पपब्य़पप

पपभ्कपपभ्खपपभ्गपपभ्घपपभ्ङपपभ्चपपभ्छप
पभ्जपपभ्झपपभ्ञपपभ्टपपभ्ठपपभ्डपपभ्ढप
पभ्णपपभ्तपपभ्थपपभ्दपपभ्धपपभ्नपपभ्ऩप
पभ्पपपभ्फपपभ्बपपभ्भपपभ्मपपभ्यपपभ्रप
पभ्ऱपपभ्लपपभ्ळपपभ्ऴपपभ्वपपभ्शपपभ्षप
पभ्सपपभ्हपपभ्क़पपभ्ख़पपभ्ग़पपभ्ज़पपभ्ड़प
पभ्ढ़पपभ्फ़पपभ्य़पप

पपम्कपपम्खपपम्गपपम्घपपम्ङपपम्चपपम्छप
पम्जपपम्झपपम्ञपपम्टपपम्ठपपम्डपपम्ढप
पम्णपपम्तपपम्थपपम्दपपम्धपपम्नपपम्ऩपपम्पप
पम्फपपम्बपपम्भपपम्मपपम्यपपम्रपपम्ऱपपम्लप
पम्ळपपम्ऴपपम्वपपम्शपपम्षपपम्सपपम्हप
पम्क़पपम्ख़पपम्ग़पपम्ज़पपम्ड़पपम्ढ़पपम्फ़प
पम्य़पप

पपय्कपपय्खपपय्गपपय्घपपय्ङपपय्चपपय्छप
पय्जपपय्झपपय्ञपपय्टपपय्ठपपय्डपपय्ढप
पय्णपपय्तपपय्थपपय्दपपय्धपपय्नपपय्नपपय्पप
पय्फपपय्बपपय्भपपय्मपपय्यपपय्रपपय्ऱपपय्लप
पय्ळपपय्ऴपपय्वपपय्शपपय्षपपय्सपपय्हप
पय्क़पपय्ख़पपय्ग़पपय्ज़पपय्ड़पपय्ढ़पपय्फ़प
पय्य़पप

पपर्कपपर्खपपर्गपपर्घपपर्ङपपर्चपपर्छपपर्जप
पर्झपपर्ञपपर्टपपर्ठपपर्डपपर्ढपपर्णपपर्तपपर्थप
पर्दपपर्धपपर्नपपर्नपपर्पपपर्फपपर्बपपर्भपपर्मप
पर्यपपर्रपपर्ऱपपर्लपपर्ळपपर्ऴपपर्वपपर्शप
पर्षपपर्सपपर्हपपर्क़पपर्ख़पपर्ग़पपर्ज़पपर्ड़पपर्ढ़प
पर्फ़पपर्य़पप

पपऱ्कपपऱ्खपपऱ्गपपऱ्घपपऱ्ङपपऱ्चपपऱ्छप
पऱ्जपपऱ्झपपऱ्ञपपऱ्टपपऱ्ठपपऱ्डपपऱ्ढपपऱ्णप
पऱ्तपपऱ्थपपऱ्दपपऱ्धपपऱ्नपपऱ्नपपऱ्पपपऱ्फप
पऱ्बपपऱ्भपपऱ्मपपऱ्यपपऱ्रपपऱ्ऱपपऱ्लपपऱ्ळप
पऱ्ऴपपऱ्वपपऱ्शपपऱ्षपपऱ्सपपऱ्हपपऱ्क़पपऱ्ख़प
पऱ्ग़पपऱ्ज़पपऱ्ड़पपऱ्ढ़पपऱ्फ़पपऱ्य़पप

पपल्कपपल्खपपल्गपपल्घपपल्ङपपल्चपपल्छप
पल्जपपल्झपपल्ञपपल्टपपल्ठपपल्डपपल्ढप
पल्णपपल्तपपल्थपपल्दपपल्धपपल्नपपल्नप
पल्पपपल्फपपल्बपपल्भपपल्मपपल्यपपल्रप
पल्ऱपपल्लपपल्ळपपल्ऴपपल्वपपल्शपपल्षप
पल्सपपल्हपपल्क़पपल्ख़पपल्ग़पपल्ज़पपल्ड़प
पल्ढ़पपल्फ़पपल्य़पप

पपळ्कपपळ्खपपळ्गपपळ्घपपळ्ङपपळ्चप
पळ्छपपळ्जपपळ्झपपळ्ञपपळ्टपपळ्ठप
पळ्डपपळ्ढपपळ्णपपळ्तपपळ्थपपळ्दप
पळ्धपपळ्नपपळ्नपपळ्पपपळ्फपपळ्बप
पळ्भपपळ्मपपळ्यपपळ्ऱपपळ्लप
पळ्ळपपळ्ऴपपळ्वपपळ्शपपळ्षपपळ्सपप
पळ्हपपळ्क़पपळ्ख़पपळ्ग़पपळ्ज़पपळ्ड़प
पळ्ढ़पपळ्फ़पपळ्य़पप

पपऴ्कपपऴ्खपपऴ्गपपऴ्घपपऴ्ङपपऴ्चपपऴ्छप
पऴ्जपपऴ्झपपऴ्ञपपऴ्टपपऴ्ठपपऴ्डपपऴ्ढपपऴ्णप
पऴ्तपपऴ्थपपऴ्दपपऴ्धपपऴ्नपपऴ्नपपऴ्पपपऴ्फप
पऴ्बपपऴ्भपपऴ्मपपऴ्यपपऴ्ऱपपऴ्ऱपपऴ्लपपऴ्ऴप
पऴ्ऴपपऴ्वपपऴ्शपपऴ्षपपऴ्सपपऴ्हपपऴ्क़पपऴ्ख़प
पऴ्ग़पपऴ्ज़पपऴ्ड़पपऴ्ढ़पपऴ्फ़पपऴ्य़पप

पपव्कपपव्खपपव्गपपव्घपपव्ङपपव्चपपव्छप
पव्जपपव्झपपव्ञपपव्टपपव्ठपपव्डपपव्ढपपव्णप
पव्तपपव्थपपव्दपपव्धपपव्नपपव्नपपव्पपपव्फप
पव्बपपव्भपपव्मपपव्यपपव्रपपव्ऱपपव्लपपव्ऴप
पव्ऴपपव्वपपव्शपपव्षपपव्सपपव्हपपव्क़पप
पव्ख़पपव्ग़पपव्ज़पपव्ड़पपव्ढ़पपव्फ़पपव्य़पप

पपश्कपपश्खपपश्गपपश्घपपश्ङपपश्चपपश्छप
पश्जपपश्झपपश्ञपपश्टपपश्ठपपश्डपपश्ढपपश्णप
पश्तपपश्थपपश्दपपश्धपपश्नपपश्नपपश्पपपश्फप
पश्बपपश्भपपश्मपपश्यपपश्रपपश्ऱपपश्लपपश्ऴप
पश्ऴपपश्वपपश्शपपश्षपपश्सपपश्हपपश्क़पपश्ख़प
पश्ग़पपश्ज़पपश्ड़पपश्ढ़पपश्फ़पपश्य़पप

पपस्कपपस्खपपस्गपपस्घपपस्ङपपस्चप
पस्छपपस्जपपस्झपपस्ञपपस्टपपस्ठपपस्डप
पस्ढपपस्णपपस्तपपस्थपपस्दपपस्धपपस्नप
पस्नपपस्पपपस्फपपस्बपपस्भपपस्मपपस्यप
पस्रपपस्ऱपपस्लपपस्ळपपस्ऴपपस्वपपस्शप
पस्षपपस्सपपस्हपपस्क़पपस्ख़पपस्ग़पपस्ज़प
पस्ड़पपस्ढ़पपस्फ़पपस्य़पप

पपह्कपपह्खपपह्गपपह्घपपह्ङपपह्चपपह्छप
पह्जपपह्झपपह्ञपपह्टपपह्ठपपह्डपपह्ढप
पह्लपपह्तपपह्थपपह्दपपह्धपपह्लपपह्नपपह्पप
पह्फपपह्बपपह्भपपह्मपपह्यपपह्यपपह्रपपह्लप
पह्ळपपह्ऴपपह्लपपह्शपपह्षपपह्सपपह्हप
पह्क़पपह्ख़पपह्ग़पपह्जपपह्ड़पपह्ढ़प
पह्फ़पपह्य़पप

पपक्कपपक्खपपक्गपपक्घपपक्ङपपक्चप
पक्छपपक्जपपक्झपपक्ञपपक्टपपक्ठपपक्डप
पक्ढपपक्णपपक्तपपक्थपपक्दपपक्धपपक्नप
पक्पपपक्फपपक्बपपक्भपपक्मपप पपक्यपपक्लप
पक्ळपपक्पपवपपक्शपप पपक्षपपक्सपपक्हपप

पपज्कपपज्खपपज्गपपज्घपपज्ङपपज्चप
पज्छपपज्जपपज्झपपज्ञपपज्टपपज्ठपपज्डप
पज्ढपपज्णपपज्तपपज्थपपज्दपपज्धपपज्नपपज्पप
पज्फपपज्बपपज्भपपज्मपप पपज्यपपज्लपपज्ळप
पज्पपवपपज्शपप पपज्षपपज्सपपज्हपप

less common half-forms

पपद्कपपद्खपपद्गपपद्घपपद्ङपपद्चपपद्छप
पद्जपपद्झपपद्ञपपद्टपपद्ठपपद्डपपद्ढप
पद्णपपद्तपपद्थपपद्दपपद्धपपद्नपपद्पप
पद्फपपद्बपपद्भपपद्मपप पपद्यपपद्लप
पद्ळपपद्पपवपपद्शपप पपद्षपपद्सपपद्हपप

पपद्धकपपद्धखपपद्धगपपद्धघपपद्धङपपद्धचपपद्धछप
पद्धजपपद्धझपपद्धञपपद्धटपपद्धठपपद्धडपपद्धढप
पद्धणपपद्धतपपद्धथपपद्धदपपद्धधपपद्धनपपद्धपप
पद्धफपपद्धबपपद्धभपपद्धमपप पपद्धयपपद्धलप
पद्धळपपद्धपपवपपद्धशपप पपद्धषपपद्धसपपद्धहपप

पपद्दकपपद्दखपपद्दगपपद्दघपपद्दङपपद्दचपपद्दछप
पद्दजपपद्दझपपद्दञपपद्दटपपद्दठपपद्दडपपद्दढप
पद्दणपपद्दतपपद्दथपपद्ददपपद्दधपपद्दनपपद्दपप
पद्दफपपद्दबपपद्दभपपद्दमपप पपद्दयपपद्दलप
पद्दळपपद्दपपवपपद्दशपप पपद्दषपपद्दसपपद्दहपप

पपक्रकपपक्रखपपक्रगपपक्रघपपक्रङपपक्रचप
पक्रछपपक्रजपपक्रझपपक्रञपपक्रटपपक्रठप
पक्रडपपक्रढपपक्रणपपक्रतपपक्रथपपक्रदप
पक्रधपपक्रनपपक्रपपपक्रफपपक्रबपपक्रभपपक्रमप
पपक्रयपपक्रलपपक्रळपपक्रपपवपपक्रशप
पपक्रषपपक्रसपपक्रहपप

पपख्कपपख्खपपख्गपपख्घपपख्ङपपख्चप
पख्छपपख्जपपख्झपपख्ञपपख्टपपख्ठप
पख्डपपख्ढपपख्णपपख्तपपख्थपपख्दपपख्धप
पख्नपपख्पपपख्फपपख्बपपख्भपपख्मप
पख्यपपख्लपपख्ळपपख्पपवपपख्शप
पख्षपपख्सपपख्हपप

पपग्कपपग्खपपग्गपपग्घपपग्ङपपग्चपपग्छप
पग्जपपग्झपपग्ञपपग्टपपग्ठपपग्डपपग्ढप
पग्णपपग्तपपग्थपपग्दपपग्धपपग्नपपग्पप
पग्फपपग्बपपग्भपपग्मपप पपग्यपपग्लपपग्ळप
पग्पपवपपग्शपप पपग्षपपग्सपपग्हपप

पपघ्कपपघ्खपपघ्गपपघ्घपपघ्ङपपघ्चपपघ्छप
पघ्जपपघ्झपपघ्ञपपघ्टपपघ्ठपपघ्डपपघ्ढप
पघ्णपपघ्तपपघ्थपपघ्दपपघ्धपपघ्नपपघ्पप
पघ्फपपघ्बपपघ्भपपघ्मपप पपघ्यपपघ्लपपघ्ळप
पघ्पपवपपघ्शपप पपघ्षपपघ्सपपघ्हपप

पपच्कपपच्खपपच्गपपच्घपपच्ङपपच्चपपच्छप
पच्जपपच्झपपच्ञपपच्टपपच्ठपपच्डपपच्ढप
पच्णपपच्तपपच्थपपच्दपपच्धपपच्नपपच्पप
पच्फपपच्बपपच्भपपच्मपप पपच्यपपच्लपपच्ळप
पच्पपवपपच्शपप पपच्षपपच्सपपच्हपप

पपज्कपपज्खपपज्गपपज्घपपज्ङपपज्चपपज्छप
पज्जपपज्झपपज्ञपपज्टपपज्ठपपज्डपपज्ढप
पज्णपपज्तपपज्थपपज्दपपज्धपपज्नपपज्पप
पज्फपपज्बपपज्भपपज्मपप पपज्यपपज्लप
पज्ळपपज्पपवपपज्शपप पपज्षपपज्सपपज्हपप

पपझ्कपपझ्खपपझ्गपपझ्घपपझ्ङपपझ्चप
पझ्छपपझ्जपपझ्झपपझ्ञपपझ्टपपझ्ठपपझ्डप
पझ्ढपपझ्णपपझ्तपपझ्थपपझ्दपपझ्धपपझ्नप
पझ्मपपझ्फपपझ्बपपझ्भपपझ्मपप पपझ्यप
पझ्लपपझ्ळपपझ्मपवपपझ्शपपझ्षपपझ्सप
पझ्हपप

पपञ्कपपञ्खपपञ्गपपञ्घपपञ्ङपपञ्चप
पञ्छपपञ्जपपञ्झपपञ्ञपपञ्टपपञ्ठप
पञ्डपपञ्ढपपञ्णपपञ्तपपञ्थपपञ्दपपञ्धप
पञ्नपपञ्पपपञ्फपपञ्बपपञ्भपपञ्मप
पञ्यपपञ्लपपञ्ळपपञ्पपवपपञ्शप
पञ्षपपञ्सपपञ्हपप

पपट्कपपट्खपपट्गपपट्घपपट्ङपपट्चपपट्छप
पट्जपपट्झपपट्ञपपट्टपपट्ठपपट्डपपट्ढप
पट्णपपट्तपपट्थपपट्दपपट्धपपट्नपपट्पप
पट्फपपट्बपपट्भपपट्मपप पपट्यपपट्लपप
पट्ळपपट्पपवपपट्शपप पपट्षपपट्सपपट्हपप

पपठ्कपपठ्खपपठ्गपपठ्घपपठ्ङपपठ्चपपठ्छप
पठ्जपपठ्झपपठ्ञपपठ्टपपठ्ठपपठ्डपपठ्ढप
पठ्णपपठ्तपपठ्थपपठ्दपपठ्धपपठ्नपपठ्पप
पठ्फपपठ्बपपठ्भपपठ्मपप पपठ्यपपठ्लप
पठ्ळपपठ्पपवपपठ्शपप पपठ्षपपठ्सपपठ्हपप

पपड्कपपड्खपपड्गपपड्घपपड्ङपपड्चपपड्छप
पड्जपपड्झपपड्ञपपड्टपपड्ठपपड्डपपड्ढप
पड्णपपड्तपपड्थपपड्दपपड्धपपड्नपपड्पप
पड्फपपड्बपपड्भपपड्मपप पपड्यपपड्लपप
पड्ळपपड्पपवपपड्शपप पपड्षपपड्सपपड्हपप

पपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्घपपढ्ङपपढ्चपपढ्छप
पढ्जपपढ्झपपढ्ञपपढ्टपपढ्ठपपढ्डपपढ्ढप
पढ्णपपढ्तपपढ्थपपढ्दपपढ्धपपढ्नपपढ्पप
पढ्फपपढ्बपपढ्भपपढ्मपप पपढ्यपपढ्लपप
पढ्ळपपढ्पपवपपढ्शपप पपढ्षपपढ्सपपढ्हपप

पपण्कपपण्खपपण्गपपण्घपपण्ङपपण्चपपण्छप
पण्जपपण्झपपण्ञपपण्टपपण्ठपपण्डपपण्ढप
पण्णपपण्तपपण्थपपण्दपपण्धपपण्नपपण्पप
पण्फपपण्बपपण्भपपण्मपप पपण्यपपण्लप
पण्ळपपण्पपवपपण्शपप पपण्षपपण्सपपण्हपप

पपत्कपपत्खपपत्गपपत्घपपत्ङपपत्चपपत्छप
पत्जपपत्झपपत्ञपपत्टपपत्ठपपत्डपपत्ढपपत्णप
पत्तपपत्थपपत्दपपत्धपपत्नपपत्पपपत्फपपत्बप
पत्भपपत्मपप पपत्यपपत्लपपत्ळपपत्पपवप
पत्शपपत्षपपत्सपपत्हपप

पपथ्कपपथ्खपपथ्गपपथ्घपपथ्ङपपथ्चपपथ्छप
पथ्जपपथ्झपपथ्ञपपथ्टपपथ्ठपपथ्डपपथ्ढप
पथ्णपपथ्तपपथ्थपपथ्दपपथ्धपपथ्नपपथ्पप
पथ्फपपथ्बपपथ्भपपथ्मपप पपथ्यपपथ्लप
पथ्ळपपथ्पपवपपथ्शपप पपथ्षपपथ्सपपथ्हपप

पपन्कपपन्खपपन्गपपन्घपपन्ङपपन्चपपन्छप
पन्जपपन्झपपन्ञपपन्टपपन्ठपपन्डपपन्ढप
पन्णपपन्तपपन्थपपन्दपपन्धपपन्नपपन्पपपन्फप
पन्बपपन्भपपन्मपप पपन्यपपन्लपपन्ळपपन्पप
वपपन्शपप पपन्षपपन्सपपन्हपप

पपफ्कपपफ्खपपफ्गपपफ्घपपफ्ङपपफ्चपपफ्छप
पफ्जपपफ्झपपफ्ञपपफ्टपपफ्ठपपफ्डपपफ्ढपपफ्णप
पफ्तपपफ्थपपफ्दपपफ्धपपफ्नपपफ्पपपफ्फपपफ्बप
पफ्भपपफ्मपप पपफ्यपपफ्लपपफ्ळपपफ्पपवप
पफ्शपप पपफ्षपपफ्सपपफ्हपप

पपप्रकपपप्रखपपप्रगपपप्रघपपप्रङपपप्रचप
पप्रछपपप्रजपपप्रझपपप्रञपपप्रटपपप्रठप
पप्रडपपप्रढपपप्रणपपप्रतपपप्रथपपप्रदपपप्रधप
पप्रनपपप्रपपपप्रफपपप्रबपपप्रभपपप्रमपप
पपप्रयपपप्रलपपप्रळपपप्रपपवपपप्रशपप
पपप्रषपपप्रसपपप्रहपप

पपब्रकपपब्रखपपब्रगपपब्रघपपब्रङपपब्रचपपब्रछप
पब्रजपपब्रझपपब्रञपपब्रटपपब्रठपपब्रडपपब्रढप
पब्रणपपब्रतपपब्रथपपब्रदपपब्रधपपब्रनपपब्रपपपब्रफप
पब्रबपपब्रभपपब्रमपप पपब्रयपपब्रलपपब्रळपपब्रपपव
पपब्रशपप पपब्रषपपब्रसपपब्रहपप